International Indexed & Referred Research Journal, December, 2012, ISSN 0975-3486, RNI- RAJBIL- 2009/30097: VOL-IV, * ISSUE- 39

शोध पत्र- शिक्षा

December,2012

अम्बेडकर का सामाजिक कार्य में योगदान

* सुनील कुमार तिवारी

* डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर

हिन्दू धर्म में उत्पीड़न के विरूद्ध अंबेडकर एक विद्रोही बन कर उभरे। उन्होने अपने जीवन काल में दो प्रमुख योगदान दिए जिन्होने उन्हे सदा–सदा के लिए मानव जाति को उनका ऋणी बना दिया। प्रथम–अछूतोंद्वार द्वितीय–भारतीय संविधान की संरचना। अंबेडकर अछूत जाति में पैदा हुए उन्होने उनकी समस्याओं, यन्त्रणाओं को अत्यन्त नजदीक से महसूस किया। उनके उद्धार के लिए अपने को समर्पित कर दिया। उन्होने समाज में अस्पष्श्यता को दूर करने के लिए और उनको समाज में बराबर स्थान दिलाने के लिए कड़ा संघर्ष किया। व्यक्तिगत प्रलोभनों से वो डिगो नहीं। उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। भारतीय संविधान की रचना के लिए इस महत्वपूर्ण कार्य का उत्तरदायित्व गाँधी जी ने अम्बेडकर को सौंपा। जिन्होने अपनी लगन एवं निष्ठा से इस विशाल दायित्व का निर्वाह किया। सबसे बड़ी बात उनका वर्ग विशेष के प्रति पूर्वाग्रह इसमें कही आड़े नहीं आया।

अंबेडकर का उदय ऐसे समय में हुआ जब गाँधी टैगोर नेहरू जैसे महान पुरुषों का उदय हो चुका था। उस पृष्ठभूमि में अंबेडकर ने अपने कार्यों द्वारा अपने व्यक्तित्व की महत्ता को स्थापित किया । युगो–युगो से अछूत के ऊपर हो रहे अत्याचार को लेकर अंबेडकर अत्यन्त चिन्तित एवं व्यथीथ थे। इसलिए वे खुलकर स्वतंत्रता संघर्ष में भाग नहीं ले सके। जिस कर्मठता के साथ अंबेडकर ने अछूतों द्वारा की समस्या को उजागर किया उसी की परिणित है आज इस वर्ग की स्थिति बेहतर हुई। और सायद अम्बेडकर की ऐसी सक्रिय भूमिका न रही होती तो ये कदापि संभव नहीं हो पाता सामाजिक एकता का प्रयास निसंदेह सराहनीय है। अम्बेडकर की धार्मिक आस्था मूल्यों पर आधारित नहीं थी उन्होने महसूस किया कि भारतीय दर्शन मे बौद्ध धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो सामाजिक एकता का आदर्श प्रस्तुत करता है।

डॉ0 अम्बेडकर हिन्दू धर्म के नहीं हिन्दू धर्म में व्याप्त पाखण्ड और जातीय अभिमान के विरोधी थे उनका आक्रोश कथनी करनी के उस भेद से था जो चींटियों को आटा गिराने मछलियों को आटे की गोलियाँ खिलाने की प्रेरणा देता है। लेकर एक अछूत के साथ पशु से भी बीता गया व्यवहार करता है। समाज की संरचना में विशमता दीर्घकाल से प्रचलित रहने के कारण एक सभ्यतागत समस्या बन गई जातिगत ऊँच–नीच की भावना और स्पृष्य अस्पृष्य की धारणा भारतीय समाज की रग–रग में समाई हुई है। भारतीय समाज में सामाजिक विषमता का आधार इतना गहरा और असरदार है कि अनेक जीवन का कोई भी स्रोत उसमें अप्रभावित नहीं है। उसके अनेक रूपों में से सर्वाधिक व्यापक और मूर्तरूप है। जाति व्यवस्था एक वट वृक्ष की तरह फैलती है। जाति में से जातियां निकलती गई हैं। जाति, समूहों को छोटे–छोटे समूहों में विभाजित करती हैं। मूल्य प्रणाली के रूप में जाति व्यवस्था सामाजिक विशमता को वैधता प्रदान करती है। जाति व्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न जातियों के पारस्परिक संबंध ऊँच–नीच तथा पवित्र–अपवित्र की धारणाओं से संचालित होते हैं। ये दोनों अवधारणायें जाति व्यवस्था के मूल आधार हैं। इन अवधारणाओं से ही सभी प्रकार के अंतर्गत व्यवहार संबंध और प्रत्येक जाति जन्तजात सामाजिक दर्जा होते हैं।

वर्तमान हिन्दू समाज की तुलना अनगिनत मंजिलों वाले एक ऐसे भवन से की गई है जिसमें एक–एक मंजिल निर्धारित है ध्यान देने की बात ये है कि इस भवन में ऊपर या नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ नहीं है। एक मंजिल पर रहने वाले किसी दूसरे मंजिल पर नहीं जा सकते, परिणामस्वरूप व्यक्ति जिस मंजिल पर जन्मा है उसी मंजिल पर उसकी मृत्यु हो जाती है। नीचे की मंजिल का व्यक्ति कितना भी योग्य क्यों न हो उसे ऊपर के मंजिल पर प्रवेश नहीं मिल सकता। ऊपर के मंजिल का व्यक्ति कितना भी अयोग्य न हो उसे नीचे की मंजिल पर उतारने का किसी को अधिकार नहीं।

जातिगत भेदभाव का सबसे भयावह और अमनुशिक रूप अस्पृष्यता है विभिन्न वर्गों एवं जातियों की सामाजिक आर्थिक स्थति और समय–समय पर उत्थान एवं पतन का खोल निरंतर चलता रहता है। भारत में अत्यंत प्राचीन काल से शिखर पर ब्राह्मण और सबसे नीचे अस्पृष्य रहे। अस्पृष्यों को किस प्रकार की और कितनी कठोर निरयोग्यतओं के तले जीना पड़ता था। आज कल्पना भी नहीं की जा सकती। अंबेडकर न अपने विख्यात और एक समय में विवास्पद रहे व्याख्यान "जाति प्रथा उन्मूलन" में महाराष्ट्र के पेशवाशासन में थोपी गई निर्योग्यताओं का उल्लेख किया है जिसका अस्पृष्यों को पालन करना पड़ता था। मराठा राज्य में पेशवाओं के शासन में जब कोई हिन्दू सड़क पर आ रहा हो, तब अछूत को सड़क पर चलने की अनुमति नहीं थी। क्यों कि उसकी परछाईं से वह अपवित्र हो जाता था। अछूत के लिए ये आवश्यक था कि वह अपनी कलाई या गर्दन पर एक ला धागा बांधे ताकि हिन्दू अनजाने में उसे छूकर अपवित्र होने से बच जाये। पेशवा की राजधानी पुणे में कमर में झाडू बांधकर चलना अछूत के लिए आवश्यक था। जिससे कि उससे

चलने से पीछे की धूल साफ होती जाये। ऐसा न हो कहीं उस रास्ते पर चलने वाला हिन्दू उसकी धूल से अपवित्र न हो जाये। पूणु में अछूत के लिए आवश्यक था कि जहाँ कहीं वह जाये अपने थूकने के लिए मिट्टी का बर्तन गर्दन पर लटकाकर चले ताकि ऐसा न हो कहीं जमींन पर गिरे उसके थूक से अनजाने में वहाँ से गुजरने वाला कोई हिन्दू अपवित्र न हो जाये।

पवित्र अपवित्र की धारणा से जुड़ी निर्योग्यताओं तथा बंदिशों का यह निर्दय नृशंस और निरंकुश रूप है। इतने वीभत्स रूप में अस्पृष्यता अब कम ही देखने में आती है। आज भी कहीं–कहीं ऐसी घटनायें होती हैं जो इन अमानुसिक सामाजिक प्रथाओं की यादों एवं अघातों के टीश को और भी प्रेरणादायी बना देती हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौर में दलितों के प्रखर प्रवक्ता अंबेडकर ने भारतीय समाज की कटु सच्चाइयों के बारे में जनजाग्रति की ज्योति जलाई थी। दलितों इस लाचारी और सामाजिक संवदनशीलता को संविधान निर्माता अच्छी तरह जानते थे संविधान निर्माण में स्वयं डॉ0 अम्बेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। संविधान बनाते समय भारत के शोसित उत्पीड़ित मनुष्य को विशेष अधिकार देने में कोई बड़ी बाधा नहीं है। इसका जीवंत दस्तावेज है। 1949 में पारित और 1950 में अमल में आया हमारा संविधान।

भारतीय संविधान दो आधारभूत तथ्यों को मान्यता देता है। समता का अधिकार और समता की रणनीति जिस समाज के विभिन्न समूहों में अतिदीर्घ काल से जबरदस्त सामाजिक विषमता व्याप्त हो। वह समता की स्थापना के लिए स्पष्ट रणनीति अनिवार्य है। संविधान में प्रत्येक नागरिक को समता का अधिकार देने के साथ ही अस्पृष्यता से उत्पीड़ित और उपेक्षित जातियों और जनजातियों के लिए विशेष साहूलियतों की भी व्यवस्था है इनके बिना दलित आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के लिए समान्य अवसर का अधिकार संवैधानिक ठकोसला बन कर रह जाएगा। समाज के दबे, कुचले समुदायों के लिए सकारात्मक पक्षपात समता के अधिकार को साकार बनाने का आवश्यक साधन है। भारतीय समाज में कुछ ऐसी सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ रही हैं। जिनके कारण करोड़ों मनुष्य अमानवीय व्यवहार अन्याय एवं अत्याचार के शिकार बने। बहुत से वर्ग अनेक कठिनाइयों से पिसते रहे हैं समाज सुधारकों ने उन दलित वर्गों की वास्तविक समस्याओं को ठीक से समझा। जो यथार्थता अर्ध मानव जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन्होने उनको ऊँचा उठाने के लिए विशेष दृष्टिकोंण अपनया। महात्मा गाँधी, डॉ0 अम्बेडकर ने अस्पृष्यताओं को भारतीय समाज का महारोग माना और उसके उन्मूलन के लिए सफलतापूर्वक प्रयत्न किये।

डॉ0 अम्बेडकर जन्म से अस्पृष्य थे। उनका जन्म महार जाति में हुआ था अभावों और अस्पृष्यता के साथ जुडे कलंक से जूझते हुए पले बढ़े थे । अम्बेडकर ने वर्ण व्यवस्था तथा जाति प्रथा का गम्भीरता से अध्ययन किया था। उच्च शिक्षा प्राप्त कर ऊँचे पदों पर पहुँच जाने पर भी उन्हे पग–पग पर सवर्ण मातहतो तक के हाथो अपमान सहना पड़ा था। अस्पृष्य होने के कारण अम्बेडकर को जो अपमान सहने पड़े इन कठिनाइयों को सहते हुए समाज व्यवस्था में समूल परिवर्तत किये बिना अस्पृष्यता जैसे अभिशाप को नहीं मिटाया जा सकता अछूतोंद्धारक के रूप में गाँधी जी अस्पृष्यता विरोधी उनकी संवेदनशील नैतिक चेतना से प्रेरित थे वे कानून के बजाय नैतिक जागरण से समाज में परिवर्तन करना चाहते थे।

डॉ0 अम्बेडकर ने कहा कि "हमें मन्दिर प्रवेश के आन्दोलन में हिस्सा लेने के बजाय चर्तुवरण्य को समाप्त करने पर जोर देना आवश्यक लगता है। चर्तुवरण्य समाप्त हो जाएगा तो अस्पृष्यता अपने आप समाप्त हो जाएगी। सिर्फ अस्पृष्यता को मिटाने के लिए का प्रत्यत्न करेंगे तो चर्तुवरण्य व्यवस्था ज्योंकि त्यों बनी रहेगी। अस्पृष्यता चर्तुवरण्य का एक अंग है इसलिए मूल पर कुठाराघात ही सुधार का सही मार्ग है। (जनता साप्ताहिक 11 फरवरी 1993)

अम्बेडकर का लक्ष्य स्वतंत्रता को समाज के निम्न से निम्नतर व्यक्ति तक ले जाना अपने जीवनकाल में अनावरत संघर्ष के बावजूद उच्च जातियों के प्रभुत्व को समाप्त नहीं कर सके। परन्तु संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से निम्नतम व्यक्ति भी उच्चतम स्थान पर आज पहुँच रहा है। और इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा कि सत्ता पर निम्न जाति की भागीदारी सुनिश्चित हुई।

संदर्भ ग्रंथ

1. द अनटचेबल्स (डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर)
2. बुध एण्ड हिज धम्म
3. कास्ट्स इन इण्डिया देयर जेनसिस
4. हू वर द शूद्राज
5. बहिस्कृत भारत
6. जनता साप्ताहिक 1993
7. शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार (रमन बिहारी लाल)
8. उदयमान भारतीय समाज में शिक्षा (रामसकल
9. पाण्डेय) सूर्या पब्लिकेशन मेरठ